नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय - राजनीति-शास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग-03, पेपर - 08
सत्र - 2019-20
दिनांक - 27.07.2020
टॉपिक — होमरूल आंदोलन का प्रारंभ और प्रगति तथा सरकार की प्रतिक्रिया -

मार्च 1916 में लोकमान्य तिलक द्वारा 'महाराष्ट्र होमरूल लीग' तथा अप्रैल 1916 को एनी बेसेन्ट द्वारा मद्रास में 'अखिल भारतीय होमरूल लीग' की स्थापना की गई। दोनों नेता सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति हेतु संगठित रूप में कार्य करने लगे। इस क्रम में पूरे भारत का दौरा किया गया और भाषणों तथा समाचारपत्रों के माध्यम से होमरूल की मांग पर जोर दिया गया। इन नेताओं की सक्रियता एवं क्रियाशीलता के परिणाम स्वरूप यह मांग प्रभावी दिखने लगा। पुलिस द्वारा भी अपनी रिपोर्ट में इसे विजय यात्रा के समान बताया गया।

एनी बेसेन्ट ने अपने दैनिक पत्र 'न्यू इंडिया' और साप्ताहिक पत्र 'कॉमन व्हील' से होमरूल आंदोलन का प्रचार प्रारंभ कर दिया। तिलक के पत्र 'केसरी' और 'मराठा' भी इसी दिशा में कार्य कर रहे थे। 1917 के आरंभ तक यह आंदोलन अपने चरम लक्ष्य पर पहुंच गया और शांतिमय तथा वैधानिक ~~आंदोलन~~ आंदोलन ने भारतीय जनता में अपूर्व जागृति का संचार किया। आंदोलन के प्रभाव के संबंध में प. जवाहरलाल नेहरू लिखते हैं कि 'देश के वातावरण में बिजली सी दौड़ गयी थी... सारा देश विचारों से आंदोलित हो उठा और ऐसे नवजीवन से भर उठा जैसा कि इसके पहले कभी नहीं हुआ था।'

सरकार की प्रतिक्रिया और उसका प्रभाव - आंदोलन की गति से घबराकर सरकार ने इसके विरुद्ध प्रतिरोधात्मक कदम उठाये। तिलक और एनी बेसेन्ट के भाषणों पर रोक (प्रतिबंध) लगा दिया गया। तिलक को

Scanned with CamScanner

एक वर्ष के लिये अपनी राजनीतिक कार्यवाहियां बंद करने का आदेश दिया गया। हालांकि तिलक द्वारा इसे हाईकोर्ट में चुनौती दिये जाने के बाद सरकार को इसे वापस लेना पड़ा। इसके प्रचार को रोकने के लिये दमन मूलक प्रेस एक्ट का खुलकर प्रयोग किया गया। एनी बेसेन्ट के 'न्यू इंडिया' और 'कॉमन व्हील' समाचार पत्रों को जब्त कर दिया गया। सरकारी आज्ञा पत्र नं. 554 के अनुसार विद्यार्थियों को राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने से रोक दिया गया। ~~और उनके~~ लिये तिलक को पंजाब और दिल्ली में प्रवेश करने की मनाही कर दी गई और श्रीमती बेसेन्ट को उनके सहयोगियों सहित नजरबंद कर दिया गया। इन सब दमनात्मक कार्यों से आंदोलन और उग्र हो गया। सारे देश में विरोध और रोष प्रकट होने लगा। होमरूल आंदोलन से विलग रहने वाले राष्ट्रीय नेता इसके सदस्य बनकर उत्तरदायी पदों को संभाल लिये और एनी बेसेन्ट के रिहाई की मांग होने लगी अंततः सरकार ने इन्हें मुक्त किया। 1917 ई. में भारत मंत्री लॉर्ड मान्टेग्यू की घोषणा के कारण होम रूल आंदोलन समाप्त हो गया।

इस प्रकार होम रूल आंदोलन ने संवैधानिक एवं प्रचारात्मक साधनों का अवलम्बन कर सहारा लेकर भावी राष्ट्रीय आंदोलन को जागृत बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner